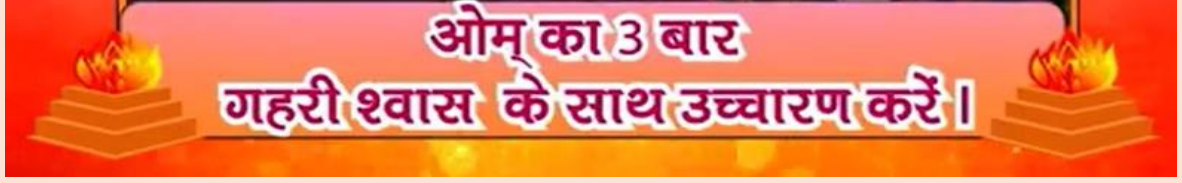


देव यज्ञ करने की विधि



आचमन मंत्र – दाहिने हाथ में जल लेकर तीन आचमन करें।

निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (1) ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥	निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (2) ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥	निम्न मन्त्रों से तीन आचमन करें- (3) ओम् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥
--------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------	------------------------------------------------------------------------------------------------------------

पुनश्च हस्त प्रक्षालन करें।

अंग स्पर्श- बाएँ हाथ में जल लेकर (दाहिने से बाएँ) निम्न मंत्रों से अंगों का स्पर्श करें।

ओम् वाङ् म आस्येऽस्तु ॥ (इस मन्त्र से मुख पर स्पर्श करें)
ओम् नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ (इस मन्त्र से दोनों नासिकाओं पर स्पर्श करें)
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ (इस मन्त्र से दोनों आँखों पर स्पर्श करें)
ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ (इस मन्त्र से दोनों कानों पर स्पर्श करें)
ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ (इस मन्त्र से दोनों भुजाओं पर स्पर्श करें)
ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु ॥ (इस मन्त्र से दोनों जंघाओं पर स्पर्श करें)
ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ (इस मन्त्र से सभी अंगों पर जल छिड़के)

अथ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

निम्न मंत्रों से ईश्वर की उपासना करेंगे।

<p>ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तत्र आ सुव॥१॥ (यजु-३०.३)</p>	<p>ओम् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्याम्नेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥२॥ (यजु-१३.४)</p>	<p>ओम् यऽआत्मदा बलदा यस्य विश्वऽउपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाभूतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥३॥ (यजु-२५.१३)</p>	<p>ओम् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइन्द्राजा जगतो बभूव। यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥४॥</p>
<p>ओम् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च वृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥ (यजु-३२.६)</p>	<p>ओम् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥६॥ (ऋ-१०.१२१.१०)</p>	<p>ओम् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवाऽअमृतमानशानास्तुतीये धामन्नध्यैरयन्त॥७॥ (यजु-३२.१०)</p>	<p>ॐ अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्निश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम॥८॥ (यजु-४०.१६)</p>

इति ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

अथ दीप प्रज्ज्वलनं – ॐ भूर्भुवः स्वः

(इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित करेंगे)

अग्नि स्थापन मंत्र

अग्निस्थापन-मन्त्र
भूर्भुवः स्वरु द्यौरिव
भूम्ना पृथिवीव वरिष्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि
पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

देवो का आह्वान करेंगे

उद्बुध्यस्वाग्ने
प्रति जागृहि
त्वमिष्टापूर्ते
संसृजेथामयं च।
अस्मिन्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्
विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत॥

समिधाधान



समिधाधान-मन्त्र
 ओ३म् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥१॥

प्रथम

समिधाधान-मन्त्र
 समिधाग्निं दुवस्यत
 घृतैर्बोधयतातिथिम् ^{निम्न}
 आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥

द्वितीय

समिधाधान-मन्त्र
 सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं
 तीव्रं जुहोतन। अग्नये
 जातवेदसे ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥३॥

तृतीय

समिधाधान-मन्त्र
 ओ३म् तं त्वा
 समिद्धिरङ्गिरो घृतेन
 वर्द्धयामसि।
 बृहच्छोचा यविष्ठ्य
 स्वाहा ॥
 इदमग्नयेऽङ्गिरसे-इदं
 न मम ॥४॥
 (यजु.-३.३)

चतुर्थ

पञ्चघृताहुति मंत्र - निम्न मंत्र से पाँच घृत की आहुतियाँ देंगे ।

ॐ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम् ॥

पञ्चघृताहुति-मन्त्र
 ओम् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(1)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र
 ओम् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(2)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र
 ओम् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(3)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र
 ओम् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(4)

पञ्चघृताहुति-मन्त्र
 ओम् अयं त इध्म
 आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
 वर्धस्व चेद्ध
 वर्धय चास्मान् प्रजया
 पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन
 समेधय स्वाहा ॥
 इदमग्नये जातवेदसे-इदं
 न मम ॥

(5)

जलसिञ्चन



जलसिञ्चन-मन्त्र
ओम् अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥

इस मंत्र से वेदी के पूर्व दिशा में

जलसिञ्चन-मन्त्र
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥

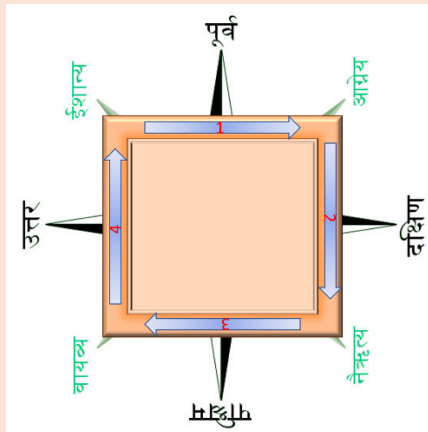
इस मंत्र से वेदी के पश्चिम दिशा में

जलसिञ्चन-मन्त्र
ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व

इस मंत्र से वेदी के उत्तर दिशा में

तत्पश्चात् निम्न मंत्र के साथ ईशान-आग्नेय-नैऋत्य-वायव्य से ईशान कोण तक जल सिंचन करेंगे ।

ओम् देव सवितः
प्रसुव यज्ञं प्रसुव
यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः
केतं नः पुनातु
वाचस्पतिर्वाचं
नः स्वदतु॥ ४॥



आधारावाज्यभागाहुति

निम्न मंत्रों के साथ यज्ञाग्नि में चार आहुतियाँ देंगे ।

आधारावाज्यभागाहुति प्रथम मन्त्र से कुण्ड के उत्तरभाग ओम् अग्नये स्वाहा ॥ इदमग्नये-इदं न मम ॥१॥	आधारावाज्यभागाहुति द्वितीय मन्त्र से कुण्ड के दक्षिणभाग ओम् सोमाय स्वाहा ॥ इदं सोमाय-इदं न मम ॥२॥	आधारावाज्यभागाहुति-मन्त्र निम्नलिखित मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में ओम् प्रजापतये स्वाहा॥ इदं प्रजापतये-इदं न मम ॥१॥ ओम् इन्द्राय स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय-इदं न मम ॥२॥
-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

कालानुसार आहुति मंत्र – निम्न मंत्रों से कालानुसार चार आहुतियाँ देंगे ।

प्रातःकालीन मन्त्र ओम् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥ ओम् सूर्यो वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा ॥२॥ ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥ ओम् सजृद्धेवेन सवित्रा सजूरुषमेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥४॥	सायंकालीन मन्त्र ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥ ओम् अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा ॥२॥ ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥ ओम् सजृद्धेवेन सवित्रा सजू राज्येन्द्रवत्या । जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ॥४॥
----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

उभयकालीन मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन चार आहुतियाँ देंगे ।

<p>उभयकालीन-मन्त्र ओम् भूर्ग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय-इदं न मम ॥ ॥१॥ ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय-इदं न मम ॥ ॥२॥ ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय व्यानाय-इदं न मम ॥३॥ ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः -इदं न मम ॥४॥</p>	<p>उभयकालीन समर्पण-मन्त्र ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो स्वाहा ॥</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------

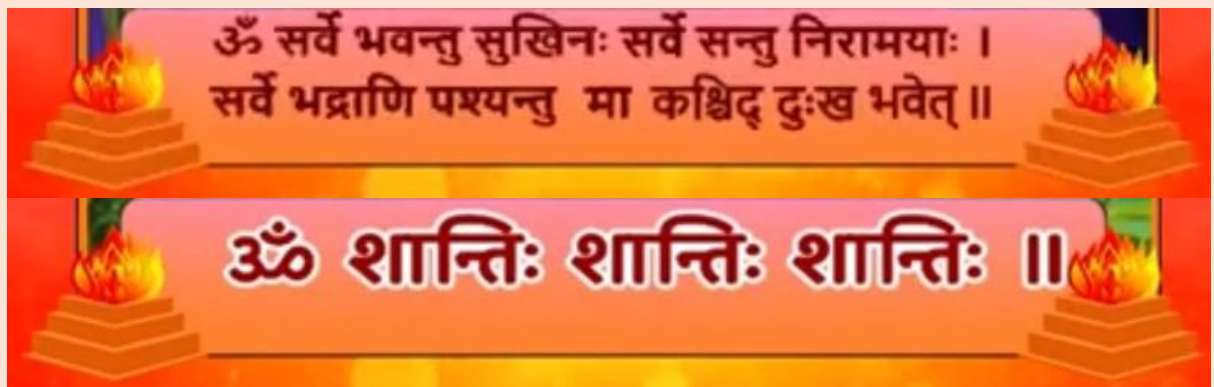
प्रार्थना मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन तीन आहुतियाँ देंगे ।

<p>उभयकालीन प्रार्थना-मन्त्र ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥१॥</p>	<p>ओम् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रन्तन्न आ सुव॥ २॥ ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्युस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम स्वाहा॥३॥</p>
--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

गायत्री मंत्र – तत्पश्चात् गायत्री मंत्र से संकल्पानुसार आहुतियाँ देकर यज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे।



विश्व कल्याण की कामना एवं शांति मंत्र –



इति

नोट :- यह लघु पुस्तिका स्वामी यज्ञदेव जी के वीडियो ([लिंक](#)) के आधार पर देव यज्ञ में आम जन के सहायतार्थ बनायी गई है। इसका कोई आर्थिक निहितार्थ नहीं है।